आयातुहा 112 | 21 सूरतुल अम्बियाइ मक्कियतुन 73 | रुकूआ़तुहा 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَ هُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۚ ①

1. लोगों के लिए उनके ह़िसाबका वक़्त क़रीब आ पहुंचा मगर वोह गफ़लत में (पड़े ताअ़तसे) मुंह फेरे हुए हैं।

مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۙ ②

2. उनके पास उनके रबकी जानिबसे जब भी कोई नई नसीह़त आती है तो वोह उसे यूं (बे परवाही से) सुनते हैं गोया वोह खेलकूद में लगे हुए हैं।

لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖۛ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖۛ هَلْ هٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ③

3. उनके दिल ग़ाफ़िल हो चुके हैं, और (येह) ज़ालिम लोग (आपके ख़िलाफ़) आहिस्ता आहिस्ता सरगोशियां करते हैं कि येह तो मह़ज़ तुम्हारे ही जैसा एक बशर है, क्या फिर (भी) तुम (उसके) जादूके पास जाते हो ह़ालांकि तुम देख रहे हो।

قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۖ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ④

4. (नबिय्ये मुअ़ज़्ज़म ﷺ ने) फ़रमाया कि मेरा रब आस्मान और ज़मीन में कही जानेवाली (हर) बातको जानता है और वोह ख़ूब सुननेवाला ख़ूब जाननेवाला है।

بَلْ قَالُوْۤا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۖۚ فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَاۤ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ⑤

5. बल्कि (ज़ालिमोंने यहां तक) कहा कि येह (क़ुरआन) परेशान ख़्वाबों (में देखी हुई बातें) हैं बल्कि इस (रसूल ﷺ)ने उसे (ख़ुद ही) घड़ लिया है बल्कि (येह कि) वोह शाइ़र है (अगर येह सच्चा है) तो येह (भी) हमारे पास कोई निशानी ले आए जैसा कि अगले (रसूल निशानियों के साथ) भेजे गए थे।

مَاۤ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ

6. उनसे पहले हमने जिस भी बस्तीको हलाक किया वोह

أَهْلَكْنٰهَا ۚ أَفَهُمْ يُؤْمِنُونَ ٦

(उनही निशानियों पर) ईमान नहीं लाई थी तो क्या येह ईमान ले आएंगे।

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ إِلَّا رِجَالًا
نُّوحِيٓ إِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوٓا أَهْلَ الذِّكْرِ
إِن كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ٧

7. और (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) हमने आपसे पहले (भी) मर्दों को ही (रसूल बना कर) भेजा था हम उनकी तरफ़ वह़ी भेजा करते थे (लोगो !) तुम अह्ले ज़िक्रसे पूछ लिया करो अगर तुम (ख़ुद) न जानते हो।

وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَأْكُلُونَ
الطَّعَامَ وَمَا كَانُوا خٰلِدِينَ ٨

8. और हमने उन (अम्बिया) को ऐसे जिस्मवाला नहीं बनाया था कि वोह खाना न खाते हों और न ही वोह (दुनियामें बह़याते ज़ाहिरी) हमेशा रेहनेवाले थे।

ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَأَنجَيْنٰهُمْ وَ
مَن نَّشَآءُ وَأَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِينَ ٩

9. फिर हमने उन्हें अपना वा'दा सच्चा कर दिखाया फिर हमने उन्हें और जिसे हमने चाहा नजात बख़्शी और हमने ह़दसे बढ़ जानेवालों को हलाक कर डाला।

لَقَدْ أَنزَلْنَآ إِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيهِ
ذِكْرُكُمْ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ١٠ ع

10. बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ ऐसी किताब नाज़िल फ़रमाई है जिसमें तुम्हारी नसीह़त (का सामान) है, क्या तुम अक़्ल नहीं रखते।

وَكَمْ قَصَمْنَا مِن قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً
وَّأَنشَأْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِينَ ١١

11. और हमने कितनी ही बस्तियों को तबाहो बरबाद कर डाला जो ज़ालिम थीं और उनके बाद हमने और क़ौमों को पैदा फ़रमा दिया।

فَلَمَّآ أَحَسُّوا بَأْسَنَآ إِذَا هُم مِّنْهَا
يَرْكُضُونَ ١٢

12. फिर जब उन्होंने हमारे अ़ज़ाब (की आमद) को मह़सूस किया तो वोह वहांसे तेज़ी के साथ भागने लगे।

لَا تَرْكُضُوا وَارْجِعُوٓا إِلٰى مَآ
أُتْرِفْتُمْ فِيهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ
تُسْـَٔلُونَ ١٣

13. (उनसे कहा गया :) तुम जल्दी मत भागो और उसी जगह वापस लौट जाओ जिसमें तुम्हें आसाइशें दी गई थीं और अपनी (पुर तअ़य्युश) रहाइश गाहों की तरफ़ (पलट जाओ) शायद तुमसे बाज़ पुर्स की जाए।

قَالُوا يٰوَيْلَنَآ إِنَّا كُنَّا ظٰلِمِينَ ١٤

14. वोह केहने लगे : हाए शोमिए क़िस्मत ! बेशक हम ज़ालिम थे।

فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى
جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ﴿١٥﴾

15. सो हमेशा उनकी येही फ़रियाद रही यहां तक कि हमने उनको कटी हुई खेती (और) बुझी हुई आग (के ढेर) की तरह बना दिया।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ
وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿١٦﴾

16. और हमने आस्मान और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान है खेल तमाशे के तौर पर (बेकार) नहीं बनाया।

لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ
مِنْ لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٧﴾

17. अगर हम कोई खेल तमाशा इख़्तियार करना चाहते तो उसे अपनी ही तरफ़से इख़्तियार कर लेते अगर हम (ऐसा) करनेवाले होते।

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ
فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ؕ وَلَكُمُ
الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾

18. बल्कि हम हक़से बातिल पर पूरी कुव्वतके साथ चोट लगाते हैं सो हक़ उसे कुचल देता है पस वोह (बातिल) हलाक हो जाता है, और तुम्हारे लिए उन बातोंके बाइस तबाही है जो तुम बयान करते हो।

وَلَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ
عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ﴿١٩﴾ ۚ

19. और जो कोई आस्मानों और ज़मीन में है उसीका (बन्दओ मम्लूक) है, और जो (फ़रिश्ते) उसकी क़ुर्बत में (रेहते) हैं वोह न तो उसकी इबादत से तकब्बुर करते हैं और न वोह (उसकी ताअ़त बजा लाते हुए) थकते हैं।

يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ
لَا يَفْتُرُوْنَ ﴿٢٠﴾

20. वोह रात दिन (उसकी) तस्बीह़ करते रेहते हैं और मा'मूली सा वक़्फ़ा भी नहीं करते।

اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ
هُمْ يُنْشِرُوْنَ ﴿٢١﴾

21. क्या उन (काफ़िरों) ने ज़मीन (की चीज़ों) में से ऐसे मा'बूद बना लिए हैं जो (मुर्दोंको) ज़िन्दा कर के उठा सक्ते हैं?

لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ
لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ
الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٢٢﴾

22. अगर उन दोनों (ज़मीनो आस्मान) में अल्लाहके सिवा और (भी) मा'बूद होते तो येह दोनों तबाह हो जाते पस अल्लाह जो अ़र्शका मालिक है उन (बातों) से पाक है जो येह (मुशरिक) बयान करते हैं।

لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَ هُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. उससे उसकी बाज़ पुर्स नहीं की जा सक्ती वोह जो कुछ भी करता है, और उनसे (हर काम की) बाज़ पुर्स की जाएगी।

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَ ذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٤﴾

24. क्या उन (काफ़िरों) ने उसे छोड़ कर और मा'बूद बना लिए हैं ? फ़रमा दीजिए : अपनी दलील लाओ, येह (क़ुरआन) उन लोगों का ज़िक्र है जो मेरे साथ हैं और उनका (भी) ज़िक्र है जो मुझसे पहले थे, बल्कि उनमें से अक्सर लोग ह़क़को नहीं जानते इस लिए वोह इससे रूगरदानी किए हुए हैं।

وَ مَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْۤ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴿٢٥﴾

25. और हमने आपसे पहले कोई रसूल नहीं भेजा मगर हम उसकी तरफ़ येही वह़ी करते रहे कि मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं पस तुम मेरी (ही) इबादत किया करो।

وَ قَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ۙ﴿٢٦﴾

26. येह लोग केहते हैं कि (ख़ुदाए) रह़मान ने (फ़रिश्तों को अपनी) औलाद बना रखा है वोह पाक है, बल्कि (जिन फ़रिश्तोंको येह उसकी औलाद समझते हैं) वोह (अल्लाहके) मुअ़ज़्ज़ज़ बंदे हैं।

لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَ هُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾

27. वोह किसी बात (के करने) में उससे सब्क़त नहीं करते और वोह उसीके अम्रकी ता'मील करते रेहते हैं।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ وَ لَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَ هُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿٢٨﴾

28. वोह (अल्लाह) उन चीज़ोंको जानता है जो उनके सामने हैं और जो उनके पीछे हैं और वोह (उसके ह़ुज़ूर) सिफ़ारिश भी नहीं करते मगर उसके लिए (करते हैं) जिससे वोह ख़ुश हो गया हो और वोह उसकी हैबतो जलालसे ख़ाइफ़ रेहते हैं।

وَ مَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْۤ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ؕ

29. और उनमें से कौन है जो केह दे कि मैं उस (अल्लाह) के सिवा मा'बूद हूं सो हम उसीको दोज़ख़की सज़ा देंगे,

كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾ ع ٢ ١٩ ٢

इसी तरह हम ज़ालिमों को सज़ा दिया करते हैं।

اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ؕ وَ جَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ؕ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٠﴾

30. और क्या काफ़िर लोगोंने नहीं देखा कि जुम्ला आस्मानी काइनात और ज़मीन (सब) एक इकाई की शक्ल में जुड़े हुऐ थे पस हमने उनको फाड़ कर जुदा कर दिया, और हमने (ज़मीन पर) पैकरे हयात (की ज़िन्दगी) की नुमूद पानी से की, तो क्या वोह (क़ुरआन के बयान कर्दह इन हक़ाइक़से आगाह हो कर भी) ईमान नहीं लाते।

وَ جَعَلْنَا فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ ۪ وَ جَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٣١﴾

31. और हमने ज़मीनमें मज़बूत पहाड़ बना दिए ताकि ऐसा न हो कि कहीं वोह (अपने मदारमें हरकत करते हुए) उन्हें ले कर कांपने लगे और हमने उस (ज़मीन) में कुशादा रास्ते बनाए ताकि लोग (मुख़्तलिफ मंज़िलों तक पहुंचने के लिए) राह पा सकें।

وَ جَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوْظًا ۚۖ وَّهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿٣٢﴾

32. और हमने समाअ (या'नी ज़मीन के बालाई कुर्रों) को महफ़ूज़ छत बनाया (ताकि अहले ज़मीन को ख़ला से आनेवाली मोहलिक क़ुव्वतों और जारिहाना लेहरों के मुज़िर असरात से बचाएं) और वोह इन (समावी तब्क़ात की) निशानियों से रूगर्दां हैं।

وَ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ ؕ كُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿٣٣﴾

33. और वोही (अल्लाह) है जिसने रात और दिनको पैदा किया और सूरज और चांदको (भी), तमाम (आस्मानी कुर्रे) अपने अपने मदारके अंदर तेज़ीसे तैरते चले जाते हैं।

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ؕ اَفَاْئِنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ﴿٣٤﴾

34. और हमने आपसे पहले किसी इन्सानको (दुनियाकी ज़ाहिरी जिन्दगीमें) बक़ाए दवाम नहीं बख़्शी, तो क्या अगर आप (यहां से) इन्तिक़ाल फ़रमा जाएं तो येह लोग हमेशा रेहनेवाले हैं।

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَنَبْلُوْكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ؕ وَاِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿٣٥﴾

35. हर जानको मौतका मज़ा चखना है, और हम तुम्हें बुराई और भलाई में आज़माइश के लिए मुब्तिला करते हैं, और तुम हमारी ही तरफ़ पलटाए जाओगे।

وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا الَّذِيْ يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ۚ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٦﴾

36. और जब काफ़िर लोग आपको देखते हैं तो आपसे महज़ तमस्ख़ुर ही करने लगते हैं (और केहते हैं) क्या येही है वोह शख़्स जो तुम्हारे मा'बूदों का (रद्दो इन्कार के साथ) ज़िक्र करता है और वोह ख़ुद (ख़ुदाए) रह़्मान के ज़िक्र से इन्कारी हैं।

خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ؕ سَاُورِيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿٣٧﴾

37. इन्सान (फ़ित्रतन) जल्दबाज़ी में से पैदा किया गया है, मैं तुम्हें जल्दही अपनी निशानियां दिखाऊंगा पस तुम जल्दी का मुतालिबा न करो।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٨﴾

38. और वोह केहते हैं : येह वा'दए (अ़ज़ाब) कब (पूरा) होगा अगर तुम सच्चे हो।

لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٣٩﴾

39. अगर काफ़िर लोग वोह वक़्त जान लेते जब कि वोह (दोज़ख़की) आगको न अपने चेहरों से रोक सकेंगे और न अपनी पुश्तोंसे और न ही उनकी मददकी जाएगी (तो फिर अ़ज़ाब तलब करने में जल्दी का शोर न करते)।

بَلْ تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٤٠﴾

40. बल्कि (क़ियामत) उन्हें अचानक आ पहुंचेगी तो उन्हें बद ह़वास कर देगी सो वोह न तो उसे लौटा देनेकी ताक़त रखते होंगे और न ही उन्हें मोहलत दी जाएगी।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤١﴾ ع ٣ ١٢ ٣

41. और बेशक आपसे पहले भी रसूलोंके साथ मज़ाक किया गया सो उन लोगोंमें से उन्हें जो तमस्ख़ुर करते थे उसी (अ़ज़ाब)ने घेर लिया, जिसका वोह मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ وَ النَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ؕ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۴۲﴾

42. फ़रमा दीजिए : शबो रोज़ (खुदाए) रह्मान (के अ़ज़ाब) से तुम्हारी हिफ़ाज़तो निगेहबानी कौन कर सक्ता है, बल्कि वोह अपने (उसी) रबके ज़िक्रसे गुरेज़ां हैं।

اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ؕ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَ لَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ﴿۴۳﴾

43. क्या हमारे सिवा उनके कुछ और मा'बूद हैं जो उन्हें (अ़ज़ाब से) बचा सकें, वोह तो ख़ुद अपनी ही मदद पर क़ुदरत नहीं रखते और न हमारी तरफ़से उन्हें कोई ताईदो रफ़ाक़त मुयस्सर होगी।

بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَآءِ وَ اٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ؕ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿۴۴﴾

44. बल्कि हमने उनको और उनके आबाओ अजदादको (फ़राख़िए ऐ़श से) बहरामंद फ़रमाया था यहां तक कि उनकी उ़मरें भी दराज़ होती गईं, तो क्या वोह नहीं देखते कि हम (अब इस्लामी फ़ुतूहात के ज़रीए उनके ज़ेरे तसल्लुत) इलाक़ों को तमाम अतराफ़ से घटाते चले जा रहे हैं, तो क्या वोह (अब) ग़ल्बा पानेवाले हैं ?

قُلْ اِنَّمَآ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۫ وَ لَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ﴿۴۵﴾

45. फ़रमा दीजिए : मैं तो तुम्हे सिर्फ़ वही के ज़रीए ही डराता हूं, और बेहरे पुकार को नहीं सुना करते जब भी उन्हें डराया जाए।

وَ لَئِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿۴۶﴾

46. अगर वाक़िअ़तन उन्हें आपके रबकी तरफ़से थोड़ा सा अ़ज़ाब (भी) छू जाए तो वोह ज़रूर केहने लगेंगे : हाए हमारी बद क़िस्मती ! बेशक हम ही ज़ालिम थे।

وَ نَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ؕ وَ اِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ وَ كَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ﴿۴۷﴾

47. और हम क़ियामत के दिन अ़द्लो इन्साफ़के तराज़ू रख देंगे सो किसी जान पर कोई ज़ुल्म न किया जाएगा, और अगर (किसी का अ़मल) राईके दाने के बराबर भी होगा (तो) हम उसे (भी) हाज़िर कर देंगे, और हम हिसाब करने को काफ़ी हैं।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ وَهَارُونَ
الْفُرْقَانَ وَضِيَاءً وَذِكْرًا
لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٨﴾

48.और बेशक हमने मूसा और हारून (عليه السلام) को (ह़क़ो बातिल में) फ़र्क़ करनेवाली और (सरापा) रौशनी और परहेज़गारों के लिए नसीह़त (पर मब्नी किताब तौरात) अ़ता फ़रमाई।

الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَ
هُم مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُونَ ﴿٤٩﴾

49. जो लोग अपने रबसे नादीदह डरते हैं और जो क़ियामत (की हौलनाकियों) से खाइफ़ रेहते हैं।

وَهَٰذَا ذِكْرٌ مُّبَارَكٌ أَنزَلْنَاهُ ۚ
أَفَأَنتُمْ لَهُ مُنكِرُونَ ﴿٥٠﴾ ع

50. येह (क़ुरआन) बरकतवाला ज़िक्र है जिसे हमने नाज़िल फ़रमाया है, क्या तुम उससे इन्कार करनेवाले हो।

وَلَقَدْ آتَيْنَا إِبْرَاهِيمَ رُشْدَهُ مِن
قَبْلُ وَكُنَّا بِهِ عَالِمِينَ ﴿٥١﴾

51. और बेशक हमने पहले से ही इब्राहीम (عليه السلام) को उनके (मर्तबे के मुताबिक़) फ़ह्मो हिदायत दे रखी थी और हम उन (की इस्ते'दादो अहलियत) को खूब जाननेवाले थे।

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا هَٰذِهِ
التَّمَاثِيلُ الَّتِي أَنتُمْ لَهَا عَاكِفُونَ ﴿٥٢﴾

52. जब उन्होंने अपने बाप (चचा) और अपनी क़ौमसे फ़रमाया येह कैसी मूरतियां हैं जिन (की परस्तिश) पर तुम जमे बैठे हो।

قَالُوا وَجَدْنَا آبَاءَنَا لَهَا عَابِدِينَ ﴿٥٣﴾

53. वोह बोले : हमने अपने बापदादाको इन्हीं की परस्तिश करते पाया था।

قَالَ لَقَدْ كُنتُمْ أَنتُمْ وَآبَاؤُكُمْ
فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٥٤﴾

54. (इब्राहीम عليه السلام ने) फ़रमाया : बेशक तुम और तुम्हारे बापदादा (सब) सरीह़ गुमराही में थे।

قَالُوا أَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ أَمْ أَنتَ مِنَ
اللَّاعِبِينَ ﴿٥٥﴾

55. वोह बोले : क्या (सिर्फ़) तुम ही ह़क़ लाए हो या तुम (मह़ज़) तमाशागरों में से हो।

قَالَ بَل رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَ
الْأَرْضِ الَّذِي فَطَرَهُنَّ ۖ وَأَنَا
عَلَىٰ ذَٰلِكُم مِّنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٥٦﴾

56. (इब्राहीम عليه السلام ने) फ़रमाया : बल्कि तुम्हारा रब आस्मानों और ज़मीन का रब है जिसने उन (सब) को पैदा फ़रमाया और मैं इस (बात) पर गवाही देनेवालों में से हूं।

وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾

57. और अल्लाहकी क़सम मैं तुम्हारे बुतोंके साथ ज़रूर एक तदबीर अ़मल में लाऊंगा उसके बादके जब तुम पीठ फैरकर पलट जाओगे।

فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٨﴾

58. फिर इब्राहीम (عليه السلام) ने उन (बुतों) को टुकड़े टुकड़े कर डाला सिवाए बड़े (बुत) के ताकि वोह लोग उसकी तरफ़ रुजूअ़ करें।

قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٩﴾

59. वोह केहने लगे : हमारे मा'बूदों का येह ह़ाल किसने किया है? बेशक वोह ज़रूर ज़ालिमों में से है।

قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٠﴾

60. (कुछ) लोग बोले : हमने एक नौजवान का सुना है जो उनका ज़िक्र (इन्कारो तन्क़ीदसे) करता है उसे इब्राहीम कहा जाता है।

قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ﴿٦١﴾

61. वोह बोले : उसे लोगों के सामने ले आओ ताकि वोह (उसे) देख लें।

قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٢﴾

62. (जब इब्राहीम عليه السلام आए तो) वोह केहने लगे : क्या तुम ने ही हमारे मा'बूदों के साथ येह ह़ाल किया है ऐ ईब्राहीम?

قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٣﴾

63. आपने फ़रमाया : बल्कि येह (काम) उनके उस बड़े(बुत)ने किया होगा तो उन (बुतों)से ही पूछो अगर वोह बोल सक्ते हैं।

فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾

64. फिर वोह अपनी ही (सोचों की) तरफ़ पलट गए तो केहने लगे : बेशक तुम ख़ुदही (उन मजबूरो बेबस बुतोंकी पूजा कर के) ज़ालिम हो (गए हो)।

ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٥﴾

65. फिर वोह अपने सरों के बल औंधे कर दिए गए (या'नी उनकी अ़क़्लें औंधी हो गईं और केहने लगे :) बेशक (ऐ इब्राहीम!) तुम ख़ुद ही जानते हो कि येह तो बोलते नहीं हैं।

قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّ لَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٦﴾

66. (इब्राहीम ﷺ ने) फ़रमाया : फिर क्या तुम अल्लाह को छोड़ कर इन (मूर्तियों) को पूजते हो जो न तुम्हें कुछ नफ़ा' दे सक्ती हैं और न तुम्हें नुक़्सान पहुंचा सक्ती हैं।

اُفٍّ لَّكُمْ وَ لِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾

67. तुफ़ है तुम पर (भी) और उन (बुतों) पर (भी) जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो, तो क्या तुम अ़क़्ल नहीं रखते?

قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَ انْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٦٨﴾

68. वोह बोले : उसको जला दो और अपने (तबाह ह़ाल) मा'बूदोंकी मदद करो अगर तुम (कुछ) करनेवाले हो।

قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّ سَلٰمًا
عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ۙ﴿٦٩﴾

69. हमने फ़रमाया : ऐ आग ! तू इब्राहीम पर ठंडी और सरापा सलामती हो जा।

وَ اَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ
الْاَخْسَرِيْنَ ۚ﴿٧٠﴾

70. और उन्होंने इब्राहीम (ﷺ) के साथ बुरी चाल का इरादा किया था मगर हमने उन्हें बुरी तरह नाकाम कर दिया।

وَ نَجَّيْنٰهُ وَ لُوْطًا اِلَى الْاَرْضِ
الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾

71. और हमने इब्राहीम (ﷺ) को और लूत (ﷺ) को (जो आपके भतीजे या'नी आपके भाई हारान के बेटे थे) बचा कर (इ़राक़ से) उस सरज़मीने (शाम) की तरफ़ ले गए जिसमें हमने जहानवालों के लिए बरकतें रख्खी हैं

وَ وَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ ؕ وَ يَعْقُوْبَ
نَافِلَةً ؕ وَ كُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ﴿٧٢﴾

72. और हमने उन्हें (फ़रज़न्द) इस्ह़ाक़ (ﷺ) बख़्शा और (पोता) या'क़ूब (ﷺ) (उनकी दुआ़से) इज़ाफ़ी बख़्शा, और हमने उन सबको सालेह बनाया था।

وَ جَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا
وَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ
وَ اِقَامَ الصَّلٰوةِ وَ اِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ
وَ كَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ﴿٧٣﴾

73. और हमने उन्हें (इन्सानियत का) पेश्वा बनाया वोह (लोगोंको) हमारे हुक्मसे हिदायत करते थे और हमने उनकी तरफ़ आ'माले ख़ैर और नमाज़ क़ाइम करने और ज़कात अदा करने (के अह़काम) की वह़ी भेजी और वोह सब हमारे इ़बादत गुज़ार थे।

وَ لُوۡطًا اٰتَيۡنٰهُ حُكۡمًا وَّ عِلۡمًا وَّ
نَجَّيۡنٰهُ مِنَ الۡقَرۡيَةِ الَّتِىۡ كَانَتۡ
تَّعۡمَلُ الۡخَبٰٓئِثَ ؕ اِنَّهُمۡ كَانُوۡا
قَوۡمَ سَوۡءٍ فٰسِقِيۡنَ ۙ﴿۷۴﴾

74. और लूत (عليه السلام) को (भी) हमने हिक्मत और इल्मसे नवाज़ा था और हमने उन्हें उस बस्तीसे नजात दी जहांके लोग गंदे काम किया करते थे। बेशक वोह बहुत ही बुरी (और) बद किर्दार क़ौमथी।

وَاَدۡخَلۡنٰهُ فِىۡ رَحۡمَتِنَا ؕ اِنَّهٗ مِنَ
الصّٰلِحِيۡنَ ﴿۷۵﴾

75. और हमने लूत (عليه السلام) को अपने हरीमे रहमत में दाख़िल फ़रमा लिया। बेशक वोह सालेहीनमें से थे।

ع ٢٥ ٥

وَ نُوۡحًا اِذۡ نَادٰى مِنۡ قَبۡلُ
فَاسۡتَجَبۡنَا لَهٗ فَنَجَّيۡنٰهُ وَ اَهۡلَهٗ مِنَ
الۡكَرۡبِ الۡعَظِيۡمِ ۚ﴿۷۶﴾

76. और नूह (عليه السلام को भी याद करें) जब उन्होंने उन (अम्बिया عليهم السلام) से पहले (हमें) पुकारा था सो हमने उनकी दुआ़ क़ुबूल फ़रमाई पस हमने उनको और उनके घरवालों को बड़े शदीद ग़मो अन्दोह से नजात बख़्शी।

وَ نَصَرۡنٰهُ مِنَ الۡقَوۡمِ الَّذِيۡنَ
كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمۡ كَانُوۡا قَوۡمَ
سَوۡءٍ فَاَغۡرَقۡنٰهُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ﴿۷۷﴾

77. और हमने उस क़ौम(के अज़िय्यतनाक माहौल) में उनकी मदद फ़रमाई जो हमारी आयतों को झुटलाते थे। बेशक वोह (भी) बहुत बुरी क़ौमथी सो हमने उन सबको ग़र्क़ कर दिया।

وَ دَاوٗدَ وَ سُلَيۡمٰنَ اِذۡ يَحۡكُمٰنِ فِى
الۡحَرۡثِ اِذۡ نَفَشَتۡ فِيۡهِ غَنَمُ الۡقَوۡمِ ۚ
وَكُنَّا لِحُكۡمِهِمۡ شٰهِدِيۡنَ ۙ﴿۷۸﴾

78. और दाऊद और सुलैमान (عليهما السلام) (का क़िस्सा भी याद करें) जब वोह दोनों खेती (के एक मुक़दमे) में (फ़ैसला करने लगे जब एक क़ौमकी बकरियां उस में रातके वक़्त बिग़ैर चरवाहे के घुस गई थीं (और उस खेती को तबाह कर दिया था), और हम उनके फ़ैसलेका मुशाहिदा फ़रमा रहे थे।

فَفَهَّمۡنٰهَا سُلَيۡمٰنَ ۚ وَ كُلًّا اٰتَيۡنَا
حُكۡمًا وَّ عِلۡمًا ۫ وَّسَخَّرۡنَا مَعَ دَاوٗدَ
الۡجِبَالَ يُسَبِّحۡنَ وَالطَّيۡرَ ؕ وَ كُنَّا
فٰعِلِيۡنَ ﴿۷۹﴾

79. चुनान्चे हम ही ने सुलैमान (عليه السلام) को वोह (फ़ैसला करनेका तरीक़ा) सिखाया था और हमने उन सबको हिक्मत और इल्मसे नवाज़ा था और हमने पहाड़ों और परिन्दों (तक) को दाऊद (عليه السلام) के (हुक्म के) साथ पाबंद कर दिया था वोह (सब उनके साथ मिल कर) तस्बीह पढ़ते थे, और हम ही (येह सब कुछ) करनेवाले थे।

وَ عَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ﴿۸۰﴾

80. और हमने दाऊद (عليه السلام) को तुम्हारे लिए ज़िरह बनाने का फ़न सिखाया था ताकि वोह तुम्हारी लड़ाई में तुम्हें ज़रर से बचाएं, तो क्या तुम शुक्रगुज़ार हो ?

وَ لِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَ كُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿۸۱﴾

81. और (हमने) सुलैमान (عليه السلام) के लिए तेज़ हवाको मुसख़्ख़र कर दिया) जो उनके हुक्मसे (जुम्ला अतराफ़ो अक्नाफ़ से) उस सर ज़मीने (शाम) की तरफ़ चला करती थी जिसमें हमने बरकतें रखी हैं, और हम हर चीज़को (खूब) जाननेवाले हैं।

وَ مِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَ يَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَ كُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ۙ﴿۸۲﴾

82. और कुछ शैतान (देवों और जिन्नों) को भी (सुलैमान (عليه السلام) के ताबे' कर दिया था) जो उनके लिए (दरिया में) गोते लगाते थे और उसके सिवा (उनके हुक्म पर) दीगर ख़िदमात भी अंजाम देते थे और हम ही उन (देवों)के निगेहबान थे।

وَ اَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَ اَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۚ﴿۸۳﴾

83. और अैयूब (عليه السلام का क़िस्सा याद करें) जब उन्होंने अपने रबको पुकारा कि मुझे तक्लीफ़ छू रही है और तू सब रहम करनेवालों से बढ़ कर महरबान है।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ ۫ وَ اٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَ مِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَ ذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿۸۴﴾

84. तो हमने उनकी दुआ क़ुबूल फ़रमा ली और उन्हें जो तक्लीफ़ (पहुंच रही) थी सो हमने उसे दूर कर दिया और हमने उन्हें उनके अहलो अ़याल (भी) अ़ता फ़रमाए और उनके साथ इतने ही और (अ़ता फ़रमा दिए) येह हमारी तरफ़से ख़ास रहमत और इ़बादत गुजारों के लिए नसीह़त है (कि अल्लाह सब्रो शुक्र का अज्र कैसे देता है)।

وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِدْرِيْسَ وَ ذَا الْكِفْلِ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ۚ﴿۸۵﴾

85. और इस्माईल और इदरीस और ज़ुल किफ़्ल (عليه السلام) (को भी याद फ़रमाएं), येह सब साबिर लोग थे।

وَ اَدْخَلْنٰهُمْ فِیْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿۸۶﴾

86. और हमने उन्हें अपने (दामने) रह़मत में दाख़िल फ़रमाया। बेशक वोह नेकूकारों में से थे।

وَ ذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَیْهِ فَنَادٰی فِی الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ۫ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۸۷﴾ۚ

87. और ज़ुन्नून (मछली के पेटवाले नबी علیہ السلام को भी याद फ़रमाइए) जब वोह (अपनी क़ौम पर) ग़ज़बनाक हो कर चल दिए पस उन्होंने येह ख़याल कर लिया कि हम उन पर (उस सफ़र में) कोई तंगी नहीं करेंगे फिर उन्होंने (दरिया, रात और मछलीके पेटकी तेह दर तेह) तारीकियों में (फंस कर) पुकारा कि तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तेरी ज़ात पाक है, बेशक मैं ही (अपनी जान पर) ज़ियादती करनेवालों में से था।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَ نَجَّیْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ؕ وَ كَذٰلِكَ نُنْجِی الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۸۸﴾

88. पस हमने उनकी दुआ़ क़ुबूल फ़रमा ली और हमने उन्हें ग़मसे नजात बख़्शी, और इसी तरह़ हम मोमिनों को नजात दिया करते हैं।

وَ زَكَرِیَّاۤ اِذْ نَادٰی رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِیْ فَرْدًا وَّ اَنْتَ خَیْرُ الْوٰرِثِیْنَ ﴿۸۹﴾ۚ

89. और ज़करिय्या (علیہ السلام को भी याद करें) जब उन्होंने अपने रबको पुकारा : ऐ मेरे रब ! मुझे अकेला मत छोड़ और तू सब वारिसोंसे बेहतर है।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۟ وَ وَهَبْنَا لَهٗ یَحْیٰی وَ اَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا یُسٰرِعُوْنَ فِی الْخَیْرٰتِ وَ یَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّ رَهَبًا ؕ وَ كَانُوْا لَنَا خٰشِعِیْنَ ﴿۹۰﴾

90. तो हमने उनकी दुआ़ क़ुबूल फ़रमा ली और हमने उन्हें यह्या (علیہ السلام) अ़ता फ़रमाया और उनकी ख़ातिर उनकी ज़ौजाको (भी) दुरुस्त (क़ाबिले औलाद) बना दिया। बेशक येह (सब) नेकीके कामों (की अंजाम दही) में जल्दी करते थे और हमें शौक़ो रग़बत और ख़ौफ़ो ख़शिय्यत (की कैफ़िय्यतों) के साथ पुकारा करते थे, और हमारे हुज़ूर बड़े इज्ज़ो नियाज़ के साथ गिड़गिड़ाते थे।

وَ الَّتِیْۤ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا

91. उस (पाकीज़ा) ख़ातून (मरयम (علیہا السلام) को भी याद

فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ
اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩١﴾

करें) जिसने अपनी इफ़्फ़तकी हिफ़ाज़त की फिर हमने उसमें अपनी रूह़ फूंक दी और हमने उसे और उसके बेटे (ईसा عليه السلام) को जहानवालों के लिए (अपनी क़ुदरतकी) निशानी बना दिया।

اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ
وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٩٢﴾

92. बेशक येह तुम्हारी मिल्लत है (सब) एक ही मिल्लत है और मैं तुम्हारा रब हूं पस तुम मेरी (ही) इ़बादत किया करो।

وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ؕ كُلٌّ
اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ﴿٩٣﴾

93. और उन (अह्ले किताब) ने आपस में अपने दीनको टुकड़े टुकड़े कर डाला, येह सब हमारी ही जानिब लौट कर आनेवाले हैं।

ع ١٨ ٦ ٦

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ
مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا
لَهٗ كٰتِبُوْنَ ﴿٩٤﴾

94. पस जो कोई नेक अ़मल करे और वोह मोमिन भी हो तो उसकी कोशिश (की जज़ा) का इन्कार न होगा, और बेशक हम उसके (सब) आ'माल को लिख रहे हैं।

وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ
لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٩٥﴾

95. और जिस बस्ती को हमने हलाक कर डाला ना मुमकिन है कि उसके लोग (मरने के बाद) हमारी तरफ़ पलट कर न आएं।

حَتّٰٓى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ
وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿٩٦﴾

96. यहां तककि जब याजूज और माजूज खोल दिए जाएंगे और वोह हर बुलंदी से दौड़ते हुऐ उतर आएंगे।

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ
شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ
يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا
بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٩٧﴾

97. और (क़ियामत का) सच्चा वा'दा क़रीब हो जाएगा तो अचानक काफ़िर लोगोंकी आँखें खुली रेह जाएंगी, (वोह पुकार उठेंगे) हाए हमारी शोमिए क़िस्मत ! कि हम उस (दिनकी आमद) से गफ़्लत में पडे रहे बल्कि हम ज़ालिम थे।

اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
حَصَبُ جَهَنَّمَ ؕ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿٩٨﴾

98. बेशक तुम और वोह (बुत) जिनकी तुम अल्लाहके सिवा परस्तिश करते थे (सब) दोज़ख़का ईंधन हैं, तुम उसमें दाख़िल होनेवाले हो।

لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ؕ وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٩٩﴾

99. अगर येह (वाक़िअ़तन) मा'बूद होते तो जहन्नम में दाख़िल न होते, और वोह सब उसमें हमेशा रहेंगे।

لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّ هُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾

100. वहां उनकी (आहों का शोर और) चीख़ो पुकार होगी और उसमें कुछ (और) न सुन सकेंगे।

اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰٓى ۙ اُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ﴿١٠١﴾ ۙ

101. बेशक जिन लोगों के लिए पहले से ही हमारी तरफ़से भलाई मुक़र्रर हो चुकी है वोह उस (जहन्नम) से दूर रखे जाएंगे।

لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا ۚ وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٢﴾ ۚ

102. वोह उसकी आहट भी न सुनेंगे और वोह उन (ने'मतों) में हमेशा रहेंगे जिनकी उनके दिल ख़्वाहिश करेंगे।

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَ تَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٣﴾

103. (रोजे क़ियामतकी) सबसे बड़ी हौलनाकी (भी) उन्हें रंजीदा नहीं करेगी और फ़रिश्ते उनका इस्तिक्बाल करेंगे (और कहेंगे :) येह तुम्हारा (ही) दिन है जिसका तुमसे वा'दा किया जाता रहा।

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَآءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ؕ كَمَا بَدَاْنَآ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ؕ وَعْدًا عَلَيْنَا ؕ اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٠٤﴾

104. उस दिन हम (सारी) समावी काइनात को इस तरह लपेट देंगे जैसे लिखे हुए काग़ज़ात को लपेट दिया जाता है, जिस तरह हमने (काइनात को) पहली बार पैदा किया था हम (उसके ख़त्म हो जाने के बाद) उसी अ़मले तख़्लीक़ को दोहराएंगे । येह वा'दा पूरा करना हमने लाज़िम कर लिया है । हम (येह इआ़दह) ज़रूर करनेवाले हैं।

وَ لَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُوْنَ ﴿١٠٥﴾

105. और बिला शुब्हा हमने ज़बूरमें नसीह़त के (बयान के) बाद येह लिख दिया था कि (आ़लमे आख़िरतकी) ज़मीन के वारिस सिर्फ़ मेरे नेकूकार बंदे होंगे।

اِنَّ فِيْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ

106. बेशक इस (क़ुरआन) में इ़बादत गुजारों के लिए

عٰبِدِيْنَ ؕ ﴿١٠٦﴾

(हुसूले मक़्सद की) किफ़ायतो ज़मानत है।

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً
لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٧﴾

107. और (ऐ रसूले मोहतशिम !) हमने आपको नहीं भेजा मगर तमाम जहानों के लिए रहमत बना कर।

قُلْ اِنَّمَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ
اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٨﴾

108. फ़रमा दीजिए कि मेरी तरफ़ तो येही वह़ी की जाती है कि तुम्हारा मा'बूद फ़क़त एक (ही) मा'बूद है तो क्या तुम इस्लाम क़ुबूल करते हो ?

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ
وَاِنْ اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ مَّا
تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٩﴾

109. फिर अगर वोह रू गर्दानी करें तो फ़रमा दीजिए : मैंने तुम सबको यक्सां तौर पर बा ख़बर कर दिया है, और मैं नहीं जानता कि वोह (अ़ज़ाब) नज़दीक है या दूर जिसका तुमसे वा'दा किया जा रहा है।

اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ
وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿١١٠﴾

110. बेशक वोह बुलंद आवाज़ की बात भी जानता है और वोह (कुछ) भी जानता है जो तुम छुपाते हो।

وَاِنْ اَدْرِيْ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ
وَمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿١١١﴾

111.और मैं येह नहीं जानता शायद येह (ताख़ीरे अ़ज़ाब और तुम्हें दी गई ढील) तुम्हारे ह़क़में आज़माइश हो और (तुम्हें) एक मुक़र्रर वक़्त तक फ़ाइदा पहुंचाना मक़्सूद हो।

قٰلَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ وَرَبُّنَا
الرَّحْمٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١١٢﴾ ع ١٩ النصف

112. (हमारे ह़बीबने) अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! (हमारे दरमियान) ह़क़के साथ फ़ैसला फ़रमा दे, और हमारा रब बेह़द रह़म फ़रमानेवाला है, उसीसे मदद तलब की जाती है उन (दिल आज़ार) बातों पर जो (ऐ काफ़िरो !) तुम बयान करते हो।

आयातुहा 78 | 22 सूरतुल ह़ज्जि म-दनिय्यतुन 103 | रुकूआ़तुहा 10

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरू जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ

1. ऐ लोगो ! अपने रबसे डरते रहो। बेशक क़ियामत का

زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ ①

ज़ल्ज़ला बड़ी सख़्त चीज़ है।

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ
عَمَّآ اَرْضَعَتْ وَ تَضَعُ كُلُّ ذَاتِ
حَمْلٍ حَمْلَهَا وَ تَرَى النَّاسَ
سُكٰرٰى وَ مَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَ لٰكِنَّ
عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ②

2. जिस दिन तुम उसे देखोगे हर दूध पिलानेवाली (मां) उस (बच्चे) को भूल जाएगी जिसे वोह दूध पिला रही थी और हर ह़मलवाली औ़रत अपना ह़मल गिरा देगी और (ऐ देखनेवाले !) तू लोगों को नशे (की ह़ालत) में देखेगा ह़ालां कि वोह (फ़िल ह़क़ीक़त) नशे में नहीं होंगे लेकिन अल्लाहका अ़ज़ाब(ही इतना) सख़्त होगा (कि हर शख़्स ह़वास बाख़्ता हो जाएगा)।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ
بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّ يَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ
مَّرِيْدٍ ③

3. और कुछ लोग (ऐसे) हैं जो अल्लाह के बारेमें बिग़ैर इ़ल्मो दानिश के झगड़ा करते हैं और हर सरकश शैतानकी पैरवी करते हैं।

كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ
يُضِلُّهٗ وَ يَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ
السَّعِيْرِ ④

4. जिस (शैतान) के बारे में लिख दिया गया है कि जो शख़्स उसे दोस्त रखेगा सो वोह उसे गुमराह कर देगा और उसे दोज़ख़के अ़ज़ाब का रास्ता दिखाएगा।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ
مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ
تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ
عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّ
غَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ؕ وَنُقِرُّ
فِي الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰٓى اَجَلٍ
مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ
لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ۚ وَ مِنْكُمْ مَّنْ

5. ऐ लोगो ! अगर तुम्हें (मरने के बाद) जी उठनेमें शक है तो (अपनी तख़्लीक़ो इर्तिक़ा पर ग़ौर करो) कि हमने तुम्हारी तख़्लीक़ (की कीमियाई इब्तिदा) मिट्टीसे की फिर (ह़यातियाती इब्तिदा) एक तौलीदी क़त़रे से फिर (रह़मे मादरके अंदर जोंक की सूरतमें) मुअ़ल्लक़ वुजूदसे फिर एक (ऐसे) लोथड़े से जो दांतों चबाया हुआ लगता है, जिसमें बा'ज़ आ'ज़ाकी इब्तिदाई तख़्लीक़ नुमायां हो चुकी है और बा'ज़ (आ'ज़ा) की तख़्लीक़ अभी अ़मलमें नहीं आई ताकि हम तुम्हारे लिए (अपनी क़ुदरत और अपने कलामकी ह़क़्क़ानिय्यत) ज़ाहिर कर दें, और हम जिसे चाहते हैं रह़्मोंमें मुक़र्ररा मुद्दत तक ठेहराए रखते हैं

يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ
الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ
شَيْـًٔا ؕ وَ تَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً
فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَ
رَبَتْ وَ اَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۭ
بَهِيْجٍ ۝٥

फिर हम तुम्हें बच्चा बना कर निकालते हैं, फिर (तुम्हारी परवरिश करते हैं) ताकि तुम अपनी जवानीको पहुंच जाओ, और तुम में से वोह भी हैं जो (जल्द) वफ़ात पा जाते हैं और कुछ वोह हैं जो निहायत नाकारह उ़म्र तक लौटाए जाते हैं ताकि वोह (शख़्स येह मन्ज़र भी देख ले कि) सब कुछ जान लेने के बाद (अब फिर) कुछ (भी) नहीं जानता, और तू ज़मीन को बिलकुल खुश्क (मुर्दा) देखता है फिर जब हम उस पर पानी बरसा देते हैं तो उसमें ताज़गी-व-शादाबी की जुंबिश आ जाती है और वोह फूलने बढ़ने लगती है और खुशनुमा नबातात में से हर नौअ़ के जोड़े उगाती है।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَ اَنَّهٗ يُحْىِ
الْمَوْتٰى وَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۙ۝٦
وَّ اَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ
وَ اَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِى الْقُبُوْرِ ۝٧

6. येह (सब कुछ) इस लिए (होता रेहता) है कि अल्लाह ही सच्चा (ख़ालिक़ और रब) है और बेशक वोही मुर्दों (बेजान) को ज़िन्दा (जानदार) करता है और यक़ीनन वोही हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

7. और बेशक क़ियामत आनेवाली है इसमें कोई शक नहीं और यक़ीनन अल्लाह उन लोगों को ज़िन्दा कर के उठा देगा जो क़ब्रों में होंगे।

وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ
بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّ لَا هُدًى وَّ لَا كِتٰبٍ
مُّنِيْرٍ ۙ۝٨
ثَانِىَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ؕ لَهٗ فِى الدُّنْيَا خِزْىٌ وَّ نُذِيْقُهٗ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝٩
ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَ اَنَّ اللّٰهَ
لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝١٠ ع ١ ١٠ ١٨

8. और लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह (की ज़ातो सिफ़ात और क़ुदरतों) के बारे में झगड़ा करते रेहते हैं बिग़ैर इल्मो दानिश के और बिग़ैर किसी हिदायतो दलीलके और बिगैर किसी रौशन किताब के (जो आस्मानसे उतरी हो)।

9. अपनी गरदनको (तकब्बुर से) मरोड़े हुऐ ताकि (दूसरों को भी) अल्लाहकी राहसे बेहका दे, इस लिए दुनिया में (भी) रुस्वाई है और क़ियामतके दिन हम उसे जला देनेवाले अ़ज़ाब का मज़ा चखाएंगे।

10. येह तेरे उन आ'माल के बाइ़स है जो तेरे हाथ आगे भेज चुकेथे और बेशक अल्लाह अपने बंदों पर बिल्कुल ज़ुल्म करनेवाला नहीं है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ۨ اطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ۨ انْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ⑪

11. और लोगों में से कोई ऐसा भी होता है जो (बिल्कुल दीनके) किनारे पर (रेह कर) अल्लाहकी इ़बादत करता है पस अगर उसे कोई (दुन्यावी) भलाई पहुंचती है तो वोह उस (दीन) से मुत्मइन हो जाता है और अगर उसे कोई आज़माइश पहुंचती है तो अपने मुंहके बल (दीनसे) पलट जाता है, उसने दुनिया में (भी) नुक़्सान उठाया और आख़िरत में (भी), येही तो वाज़ेह़ (तौर पर) बड़ा ख़सारा है।

يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ۚ ⑫

12.वोह (शख़्स) अल्लाहको छोड़ कर उस (बुत) की इ़बादत करता है जो न उसे नुक़्सान पहुंचा सके और न ही उसे नफ़ा' पहुंचा सके, येही तो (बहुत) दूर की गुमराही है।

يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗۤ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ؕ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ⑬

13. वोह उसे पूजता है जिसका नुक़्सान उसके नफे' से ज़ियादा करीब है, वोह क्या ही बुरा मददगार है और क्या ही बुरा साथी है।

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ⑭

14. बेशक अल्लाह उन लोगोंको जो ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे जन्नतों में दाख़िल फ़रमाएगा जिनके नीचेसे नेहरें रवां हैं, यक़ीनन अल्लाह जो इरादा फ़रमाता है कर देता है।

مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَآءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ⑮

15. जो शख़्स येह गुमान करता है कि अल्लाह अपने (मह़बूबो बर्गुज़ीदा) रसूलकी दुनियाओ आख़िरत में हरगिज़ मदद नहीं करेगा उसे चाहिए कि (घरकी) छतसे एक रस्सी बांध कर लटक जाए फिर (खुदको) फांसी दे ले फिर देखे क्या उसकी येह तदबीर उस (नुसरते इलाही) को दूर कर देती है जिस पर गुस्सा खा रहा है।

وَ كَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّ اَنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ ﴿١٦﴾

16. और उसी तरह हमने इस (पूरे क़ुरआन) को रौशन दलाइल की सूरत में नाज़िल फ़रमाया है और बेशक अल्लाह जिसे इरादा फ़रमाता है हिदायत से नवाज़ता है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ الَّذِيْنَ هَادُوْا وَ الصّٰبِـُٔوْنَ وَ النَّصٰرٰى وَ الْمَجُوْسَ وَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا ۖ اِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١٧﴾

17. बेशक जो लोग ईमान लाए और जो लोग यहूदी हुए और सितारा परस्त और नसारा (ईसाई) और आतिश परस्त और मुशरिक जो हुए, यक़ीनन अल्लाह क़ियामत के दिन उन (सब) के दरमियान फ़ैसला फ़रमा देगा। बेशक अल्लाह हर चीज़का मुशाहिदा फ़रमा रहा है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَنْ فِي الْاَرْضِ وَ الشَّمْسُ وَ الْقَمَرُ وَ النُّجُوْمُ وَ الْجِبَالُ وَ الشَّجَرُ وَ الدَّوَآبُّ وَ كَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ؕ وَ كَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ؕ وَ مَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿١٨﴾ السجدة ٢

18. क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाहही के लिए (वोह सारी मख़्लूक़) सज्दह रेज़ है जो आस्मानों में है और जो ज़मीनमें है और सूरज (भी) और चांद (भी) और सितारे (भी) और पहाड़(भी) और दरख़्त (भी) और जानवर (भी) और बहोतसे इन्सान (भी), और बहुतसे (इन्सान) ऐसे भी हैं जिन पर (उनके कुफ़्र शिर्कके बाइस)अ़ज़ाब साबित हो चुका है, और अल्लाह जिसे ज़लील कर दे तो उसे कोई इ़ज़्ज़त देनेवाला नहीं हैं। बेशक अल्लाह जो चाहता है कर देता है।

هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِيْ رَبِّهِمْ ۫ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ؕ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ﴿١٩﴾

19. येह दो फ़रीक़ हैं जो अपने रबके बारे में झगड़ रहे हैं पस जो काफ़िर हो गए हैं उनके लिए आतिशे दोज़ख़के कपड़े काट (कर, सी) दिए गए हैं। उनके सरों पर खौलता हुवा पानी उंडेला जाएगा।

يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَ الْجُلُوْدُ ﴿٢٠﴾

20. जिससे उनके शिकमों में जो कुछ है पिघल जाएगा और (उनकी) खालें भी।

وَلَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ﴿٢١﴾

21. और उन (के सरों पर मारने) केलिए लोहे के हथोड़े होंगे।

كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا ۗ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٢٢﴾ ع ٢ ١٢ ٩

22. वोह जब भी शिद्दते तक्लीफ़ से वहां से निकलने का इरादा करेंगे (तो) उसमें वापस लौटा दिए जाएंगे और (उनसे कहा जाएगा) सख़्त आगके अ़ज़ाबका मज़ा चखो।

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۭ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٢٣﴾

23. बेशक अल्लाह उन लोगों को जो ईमान ले आए हैं और नेक आ'माल अंजाम देते हैं जन्नतोंमें दाख़िल फ़रमाएगा जिनके नीचे से नेहरें जारी हैं वहां उन्हें सोने के कंगनों और मोतियों से आरास्ता किया जाऐगा, और वहां उनका लिबास रेशम होगा।

وَهُدُوْٓا اِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَهُدُوْٓا اِلٰى صِرَاطِ الْحَمِيْدِ ﴿٢٤﴾

24. और उन्हें (दुनिया में) पाकीज़ा क़ौलकी हिदायत की गई और उन्हें (इस्लामके) पसंदीदा रास्ते की तरफ़ रहनुमाई की गई।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِيْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَاۗءَۨ الْعَاكِفُ فِيْهِ وَالْبَادِ ۭ وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍۢ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٥﴾ ع ٣ ١٠

25. बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया है और (दूसरों को) अल्लाहकी राहसे और उस मस्जिदे ह़राम (का'बतुल्लाह) से रोकते हैं जिसे हमने सब लोगों के लिए यक्सां बनाया है उसमें वहां के बासी और परदेसी (में कोई फ़र्क़ नहीं), और जो शख़्स उसमें नाह़क़ तरीक़े से कज रवी (या'नी मुक़र्ररा ह़ुदूदो ह़ुक़ूक़ की ख़िलाफ़ वर्ज़ी) का इरादा करे हम उसे दर्दनाक अ़ज़ाब का मज़ा चखाएंगे।

وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْـــًٔا وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّاۗىِٕفِيْنَ وَالْقَاۗىِٕمِيْنَ وَالرُّكَّعِ

26. और (वोह वक़्त याद कीजिए) जब हमने इब्राहीम (علیہ السلام) के लिए बैतुल्लाह (या'नी ख़ानए का'बा की ता'मीर) की जगह का तअ़य्युन कर दिया (और उन्हें ह़ुक्म फ़रमाया) कि मेरे साथ किसी चीज़को शरीक न ठेहराना और मेरे घरको (ता'मीर करने के बाद) तवाफ़

السُّجُوْدِ ﴿٢٦﴾

وَ اَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ﴿٢٧﴾ لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَ يَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا وَ اَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ ﴿٢٨﴾ ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَ لْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ ۗ وَ مَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ وَ اُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ﴿٣٠﴾ حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ؕ وَ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ

करनेवालों और क़ियाम करनेवालों और रुकूअ़ करनेवालों और सुजूद करनेवालों के लिए पाको साफ़ रखना।

27. और तुम लोगों में ह़जका बुलंद आवाज़से ए'लान करो वोह तुम्हारे पास पैदल और तमाम दुबले ऊंटों पर (सवार) ह़ाज़िर हो जाएंगे जो दूर दराज़के रास्तों से आते हैं।

28. ताकि वोह अपने फ़वाइद (भी) पाएं और (क़ुरबानी के) मुक़र्ररा दिनों के अंदर अल्लाहने जो मवेशी चौपाए उनको बख़्शे हैं उन पर (ज़ब्ह के वक़्त) अल्लाह के नामका ज़िक्र भी करें, पस तुम उसमें से खुद (भी) खाओ और खस्ता ह़ाल मोह़ताजको (भी) खिलाओ।

29. फिर उन्हें चाहिए कि (एह़राम से निकलते हुए बाल और नाखुन कटवा कर) अपना मैल कुचैल दूर करें और अपनी नज़्रें (या बक़िय्या मनासिक) पूरी करें और (अल्लाहके) क़दीम घर (ख़ानए का'बा) का तवाफ़े (ज़ियारत) करें।

30. येही (हुक्म) है और जो शख़्स अल्लाह (की बारगाह) से इ़ज़्ज़त याफ़्ता चीज़ोंकी ता'ज़ीम करता है तो वोह उसके रबके हां उस के लिए बेहतर है, और तुम्हारे लिए (सब) मवेशी (चौपाए) ह़लाल कर दिए गए हैं सिवाए उनके जिनकी मुमानिअ़त तुम्हें पढ़ कर सुनाई गई है सो तुम बुतों की पलीदीसे बचा करो और झूटी बातसे परहेज़ किया करो।

31. सिर्फ़ अल्लाह के हो कर रहो उसके साथ (किसी को) शरीक न ठेहराते हुए,और जो कोई अल्लाहके साथ शरीक करता है तो गोया वोह (ऐसे है जैसे) आस्मान से गिर पड़े फिर उसके परिन्दे उचक ले जाएं या हवा उसको

بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ﴿٣١﴾

किसी दूरकी जगह में नीचे जा फेंके ।

ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ
فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ﴿٣٢﴾

32. येही (हुक्म) है और जो शख़्स अल्लाहकी निशानियोंकी ता'जीम करता है (या'नी उन जानदारों, यादगारों, मुक़ामात, अह्काम और मनासिक वग़ैरा की ता'ज़ीम जो अल्लाह या अल्लाहवालों के साथ किसी अच्छी निस्बत या तअ़ल्लुक़ की वजहसे जाने पेहचाने जाते हैं) तो येह (ता'ज़ीम) दिलोंकी तक़्वा में से है (येह ता'ज़ीम वोही लोग बजा लाते हैं जिनके दिलोंको तक़्वा नसीब हो गया हो)।

لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ
مَحِلُّهَآ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٣٣﴾ ع

33. तुम्हारे लिए इन (क़ुरबानीके जानवरों) में मुक़र्ररा मुद्दत तक फ़वाइद हैं फिर उन्हें क़दीम घर (ख़ानए का'बा) की तरफ़ (ज़ब्हके लिए) पहुंचना है।

وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا
لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ
مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ؕ فَاِلٰهُكُمْ
اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗٓ اَسْلِمُوْا ؕ وَبَشِّرِ
الْمُخْبِتِيْنَ ﴿٣٤﴾

34. और हमने हर उम्मत के लिए एक क़ुरबानी मुक़र्रर कर दी है ताकि वोह उन मवेशी चौपायों पर जो अल्लाहने उन्हें इनायत फ़रमाए हैं (ज़ब्हके वक़्त) अल्लाहका नाम लें, सो तुम्हारा मा'बूद एक (ही) मा'बूद है पस तुम उसीके फ़रमांबरदार बन जाओ, और (ऐ ह़बीब!) आ़जिज़ी करनेवालों को ख़ुश ख़बरी सुना दें।

الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ
قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَآ
اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا
رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

35. (येह) वोह लोग हैं कि जब अल्लाहका ज़िक्र किया जाता है (तो) उनके दिल डरने लगते हैं और जो मुसीबतें उन्हें पहुंचती हैं उन पर सब्र करते हैं और नमाज़ क़ाइम रखनेवाले हैं और जो कुछ हमने उन्हें अ़ता फ़रमाया है उसमें से ख़र्च करते हैं।

وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ
اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا اسْمَ

36. और क़ुरबानी के बड़े जानवरों (या'नी ऊंट और गाय वग़ैरा) को हमने तुम्हारे लिए अल्लाहकी निशानियों में

اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ
جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَ اَطْعِمُوا
الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا
لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٣٦﴾

से बना दिया है उनमें तुम्हारे लिए भलाई है पस तुम (उन्हें) क़तारमें खड़ा कर के (नेज़ा मार कर नहर के वक़्त) उन पर अल्लाहका नाम लो, फिर जब वोह अपने पहलू के बल गिर जाएं तो तुम ख़ुद (भी) उस में से खाओ और क़नाअ़तसे बैठे रेहनेवालोंको और सवाल करनेवाले (मोहताजों) को (भी) खिलाओ। इस तरह हमने उन्हें तुम्हारे ताबे' कर दिया है ताकि तुम शुक्र बजा लाओ।

لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا
وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ كَذٰلِكَ
سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا
هَدٰىكُمْ ؕ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٧﴾

37. हरगिज़ न (तो) अल्लाहको उन (क़ुरबानियों) का गौश्त पहुंचता है और न उनका ख़ून मगर उसे तुम्हारी तरफ़से तक़्वा पहुंचता है, इस तरह (अल्लाहने) उन्हें तुम्हारे ताबे' कर दिया है ताकि तुम (वक्ते ज़ब्ह़) अल्लाहकी तक्बीर कहो जैसी उसने तुम्हें हिदायत फ़रमाई है, और आप नेकी करनेवालोंको ख़ुश ख़बरी सुना दें।

اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ
خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ﴿٣٨﴾ ع

38. बेशक अल्लाह साहि़बे ईमान लोगों से (दुश्मनोंका फितना-व-शर्र) दूर करता रेहता है। बेशक अल्लाह किसी ख़ाइन (और) ना शुक्रेको पसंद नहीं करता।

اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ
ظُلِمُوْا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ
لَقَدِيْرُ ۙ ﴿٣٩﴾

39. उन लोगोंको (जिहादकी) इजाज़त दे दी गई है जिनसे (नाह़क़) जंग की जा रही है उस वजह से के उन पर ज़ुल्म किया गया, और बेशक अल्लाह उन (मज़लूमों) की मदद पर बड़ा क़ादिर है।

الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ
بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا
اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ
بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ

40. (येह) वोह लोग हैं जो अपने घरोंसे नाह़क़ निकाले गए सिर्फ़ इस बिना पर कि वोह केहते थे कि हमारा रब अल्लाह है (या'नी उन्होंने बातिलकी फ़रमां रवाई तस्लीम करने से इन्कार किया था), और अगर अल्लाह इन्सानी तब्क़ातमें से बा'ज़ को बा'ज़ के ज़रीए (जिहादो इन्क़िलाबी जिद्दो जहदकी सूरत में) हटाता न रेहता तो

وَ بِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّ مَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ؕ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿۴۰﴾

ख़ानक़ाहें और गिर्जे और कलीसे और मस्जिदें (या'नी तमाम अद्यान के मज़हबी मराकिज़ और इबादतगाहें) मिस्मार और वीरान कर दी जातीं जिनमें कसरतसे अल्लाहके नामका ज़िक्र किया जाता है, और जो शख़्स अल्लाह (के दीन) की मदद करता है यक़ीनन अल्लाह उसकी मदद फ़रमाता है। बेशक अल्लाह ज़रूर (बड़ी) क़ुव्वतवाला (सब पर) ग़ालिब है (गोया ह़क़ और बातिलके तज़ादो तसादुम के इन्क़िलाबी अ़मल से ही ह़क़की बक़ा मुमकिन है)।

اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَ اَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَ لِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿۴۱﴾

41. (येह अह्ले ह़क़) वोह लोग हैं कि अगर हम उन्हें ज़मीनमें इक़्तिदार दे दें (तो) वोह नमाज़ (का निज़ाम) क़ाइम करें और ज़कात की अदायगी का इन्तिज़ाम करें और (पूरे मुआ़शरे में नेकी और) भलाई का ह़ुक्म करें और (लोगोंको) बुराईसे रोक दें, और सब कामोंका अंजाम अल्लाह ही के इख़्तियार में है।

وَ اِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّ عَادٌ وَّ ثَمُوْدُ ﴿۴۲﴾ۙ

42. और अगर येह (कुफ़्फ़ार) आपको झुटलाते हैं तो उनसे पहले क़ौमे नूह़ और आ़दो समूदने भी (अपने रसूलों को) झुटलाया था।

وَ قَوْمُ اِبْرٰهِيْمَ وَ قَوْمُ لُوْطٍ ﴿۴۳﴾ۙ

43. और क़ौमे इब्राहीम और क़ौमे लूतने (भी)।

وَّ اَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَ كُذِّبَ مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿۴۴﴾

44. और बाशिन्दगाने मद्यनने (भी झुटलाया था) और मूसा (علیہ السلام) को भी झुटलाया गया सो मैं (उन सब) काफ़िरोंको मोहलत देता रहा फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया, फिर (बताइए) मेरा अ़ज़ाब कैसा था?

فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا وَ هِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَ بِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّ قَصْرٍ مَّشِيْدٍ ﴿۴۵﴾

45. फिर कितनी ही (ऐसी) बस्तियां हैं जिन्हें हमने हलाक कर डाला इस ह़ालमें कि वोह ज़ालिम थीं पस वोह अपनी छतों पर गिरी पड़ी हैं और (उनकी हलाकत से) कितने कुंऐं बेकार (हो गए) और कितने मजबूत महल उजड़े पड़े (हैं)।

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَآ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي الصُّدُوْرِ ﴿٤٦﴾

46. तो क्या उन्होने ज़मीनमें सैरो सियाह़त नहीं की कि (शायद उन खन्डरातको देख कर) उनके दिल (ऐसे) हो जाते जिनसे वोह समझ सक्ते या कान (ऐसे) हो जाते जिनसे वोह (हक़की बात) सुन सक्ते, तो ह़क़ीक़त येह है कि(ऐसों की) आँखें अँधी नहीं होतीं लेकिन दिल अँधे हो जाते हैं जो सीनों में हैं।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ؕ وَاِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٤٧﴾

47. और येह आपसे अ़ज़ाब में जल्दी के ख़्वाहिशमंद हैं और अल्लाह हरगिज़ अपने वा'दे की ख़िलाफ़ वरज़ी न करेगा, और (जब अ़ज़ाब का वक़्त आएगा) तो (अ़ज़ाबका) एक दिन आपके रबके हां एक हज़ार सालकी मानिन्द है (उस ह़िसाबसे) जो तुम शुमार करते हो।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ وَاِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿٤٨﴾ ع ٦ ١٠ ١٣

48. और कितनी ही बस्तियां (ऐसी) हैं जिनको मैंने मोहलत दी ह़ालांकि वोह ज़ालिम थीं फिर मैंने उन्हें (अ़ज़ाबकी) गिरफ़्त में ले लिया और (हर किसी को) मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है।

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَآ اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۚ ﴿٤٩﴾

49. फ़रमा दीजिए : ऐ लोगो ! मैं तो महज तुम्हारे लिए (अ़ज़ाबे इलाही का) डर सुनानेवाला हूं।

فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٥٠﴾

50. पस जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे उनके लिए मग़फ़िरत है और (मजीद) बुज़ुर्गी वाली अ़ता है।

وَالَّذِيْنَ سَعَوْ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٥١﴾

51. और जो लोग हमारी आयतों (के रद) में कोशां रेहते हैं इस ख़याल से कि (हमें) आ़जिज़ कर देंगे वोही लोग अह्ले दोज़ख़ हैं।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّآ اِذَا تَمَنّٰى

52. और हमने आपसे पहले कोई रसूल नहीं भेजा और न कोई नबी मगर (सबके साथ येह वाक़िआ़ गुज़रा कि)

اَلْقَى الشَّيْطٰنُ فِيْۤ اُمْنِيَّتِهٖ ۚ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِى الشَّيْطٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۙ﴿۵۲﴾

जब उस (रसूल या नबी)ने (लोगों पर कलामे इलाही) पढा (तो) शैतानने (लोगों के जेहनों में) उस (नबीके) पढ़े हुए (या'नी तिलावत शुदह) कलाम में (अपनी तरफ़ से बातिल शुब्हात और फ़ासिद ख़यालात को) मिला दिया, सो शैतान जो (वस्वसे सुननेवालों के ज़ेहनों में) डालता है अल्लाह उन्हें ज़ाइल फ़रमा देता है फिर अल्लाह अपनी आयतोंको (अह्ले ईमानके दिलों में) निहायत मज़बूत कर देता है, और अल्लाह ख़ूब जाननेवाला बड़ी ह़िक्मतवाला है।

لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِى الشَّيْطٰنُ فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّ الْقَاسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِىْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ۙ﴿۵۳﴾

53. (येह इस लिए होता है) ताकि अल्लाह उन (बातिल ख़यालात और फ़ासिद शुब्हात) को जो शैतान (लोगों के ज़ेहनों में) डालता है ऐसे लोगों के लिए आज़माइश बना दे जिनके दिलोंमें (मुनाफ़िक़त की) बीमारी है और जिन लोगों के दिल (कुफ़्रो इनाद के बाइस) सख़्त हैं, और बेशक ज़ालिम लोग बड़ी शदीद मुख़ालिफ़त में मुब्तिला हैं।

وَّ لِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۵۴﴾

54. और ताकि वोह लोग जिन्हें इल्मे (सह़ीह़) अ़ता किया गया है जान लें कि वोही (वह़ी जिसकी पयग़म्बरने तिलावत की है) आपके रबकी तरफ़से (मब्नी) बर ह़क़ है सो वोह उसी पर ईमान लाऐं (और शैतानी वस्वसों को रद कर दें) और उनके दिल उस (रब) केलिए आ़जिज़ी करें, और बेशक अल्लाह मोमिनों को ज़रूर सीधी राहकी तरफ़ हिदायत फ़रमानेवाला है।

وَ لَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِىْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ ﴿۵۵﴾

55. और काफ़िर लोग हमेशा इस (क़ुरआन) के ह़वाले से शक में रहेंगे यहां तक कि अचानक उन पर क़ियामत आ पहुंचे या उस दिनका अ़ज़ाब आ जाए जिससे नजातका कोई इम्कान नहीं।

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ؕ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ؕ

56. ह़ुक्मरानी उस दिन सिर्फ़ अल्लाह ही की होगी। वोही

فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٥٦﴾

उनके दरमियान फ़ैसला फ़रमाएगा, पस जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे (वोह) ने'मत के बाग़ात में (क़ियाम पज़ीर) होंगे।

وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا
فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٥٧﴾ ع ٧ ١٤

57. और जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया तो उन ही लोगों के लिए ज़िल्लत आमेज़ अ़ज़ाब होगा।

وَ الَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
ثُمَّ قُتِلُوْٓا اَوْ مَاتُوْا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ
رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَيْرُ
الرّٰزِقِيْنَ ﴿٥٨﴾

58. और जिन लोगोंने अल्लाहकी राहमें (वतनसे) हिजरत की फिर क़त्ल कर दिए गए या (राहे हक़की मुसीबतें झेलते झेलते) मर गए तो अल्लाह उन्हें ज़रूर रिज़्क़े हसन (या'नी उख़रवी अ़ताओं) की रोज़ी बख़्शेगा, और बेशक अल्लाह सबसे बेहतर रिज़्क़ देनेवाला है।

لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ؕ
وَ اِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿٥٩﴾

59. वोह ज़रूर उन्हें उस जगह (या'नी मक़ामे रिज़वानमें) दाख़िल फ़रमाएगा जिससे वोह राज़ी हो जाएंगे, और बेशक अल्लाह ख़ूब जाननेवाला बुर्दबार है।

ذٰلِكَ ۚ وَ مَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا
عُوْقِبَ بِهٖ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ
اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ﴿٦٠﴾

60. (हुक्म) येही है, और जिस शख़्सने इतना ही बदला लिया जितनी उसे अज़िय्यत दी गई थी फिर उस शख़्स पर ज़ियादती की जाए तो अल्लाह ज़रूर उसकी मदद फ़रमाएगा । बेशक अल्लाह दरगुज़र फ़रमानेवाला बड़ा बख़्शनेवाला है।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي
النَّهَارِ وَ يُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ
وَ اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٦١﴾

61. येह इस वजह से है कि अल्लाह रातको दिन में दाख़िल फ़रमाता है और दिनको रात में दाख़िल फ़रमाता है और बेशक अल्लाह ख़ूब सुननेवाला देखनेवाला है।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَ اَنَّ مَا
يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ
وَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٦٢﴾

62. येह इस लिए कि अल्लाह ही हक़ है और बेशक वोह (कुफ़्फ़ार) उसके सिवा जो कुछ (भी) पूजते हैं वोह बातिल है और यक़ीनन अल्लाह ही बहुत बुलंद बहुत बड़ा है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ

63. क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह आस्मान की

مَآءً ۫ فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ۚ ﴿۶۳﴾

जानिब से पानी उतारता है तो ज़मीन सरसब्ज़ो शादाब हो जाती है । बेशक अल्लाह महरबान (और) बड़ा ख़बरदार है।

لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ
وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ ﴿۶۴﴾ ع ٨ ١٥

64. उसी का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और बेशक अल्लाह ही बे नियाज़ क़ाबिले सताइश है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِى
الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِىْ فِى الْبَحْرِ
بِاَمْرِهٖ ؕ وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ
تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۶۵﴾

65. क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाहने जो कुछ ज़मीन में है तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र फ़रमा दिया है और कश्तियों को (भी) जो उसके अम्र (या'नी क़ानून) से समन्दर (व दरिया) में चलती हैं, और आस्मान (या'नी ख़लाई-व-फ़िज़ाई कुर्रों) को ज़मीन पर गिरने से (एक आफ़ाक़ी निज़ाम के ज़रीए) थामे हूए है मगर उसीके हुक्मसे (जब वोह चाहेगा आपसमें टकरा जाएंगे)। बेशक अल्लाह तमाम इन्सानोंके साथ निहायत शफ़्क़त फ़रमानेवाला बड़ा महरबान है।

وَهُوَ الَّذِىْۤ اَحْيَاكُمْ ۫ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ
يُحْيِيْكُمْ ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ﴿۶۶﴾

66. और वोही है जिसने तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शी फिर तुम्हें मौत देता है फिर तुम्हें (दोबारा) ज़िन्दगी देगा । बेशक इन्सान ही बड़ा नाशुक्र गुज़ार है।

لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ
نَاسِكُوْهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِى الْاَمْرِ
وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ ؕ اِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى
مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۶۷﴾

67. हमने हर एक उम्मत के लिए (अह़कामे शरीअ़त या इ़बादतो क़ुरबानीकी) एक राह मुक़र्रर कर दी है, उन्हें उसी पर चलना है, सो येह लोग आपसे हरगिज़ (अल्लाह के) हुक्म में झगड़ा न करें, और आप अपने रबकी तरफ़ बुलाते रहें । बेशक आप ही सीधी (राहे) हिदायत पर हैं।

وَاِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ ﴿۶۸﴾

68. अगर वोह आपसे झगड़ा करें तो आप फ़रमा दीजिए : अल्लाह बेहतर जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो।

اَللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

69. अल्लाह तुम्हारे दरमियान क़ियामतके दिन उन तमाम

فِيۡمَا كُنۡتُمۡ فِيۡهِ تَخۡتَلِفُوۡنَ ﴿۶۹﴾
اَلَمۡ تَعۡلَمۡ اَنَّ اللّٰهَ يَعۡلَمُ مَا فِى السَّمَآءِ
وَ الۡاَرۡضِ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ فِىۡ كِتٰبٍ ؕ
اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيۡرٌ ﴿۷۰﴾
وَ يَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مَا لَمۡ
يُنَزِّلۡ بِهٖ سُلۡطٰنًا وَّ مَا لَيۡسَ لَهُمۡ بِهٖ
عِلۡمٌ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيۡنَ مِنۡ نَّصِيۡرٍ ﴿۷۱﴾
وَ اِذَا تُتۡلٰى عَلَيۡهِمۡ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ
تَعۡرِفُ فِىۡ وُجُوۡهِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوا
الۡمُنۡكَرَ ؕ يَكَادُوۡنَ يَسۡطُوۡنَ بِالَّذِيۡنَ
يَتۡلُوۡنَ عَلَيۡهِمۡ اٰيٰتِنَا ؕ قُلۡ
اَفَاُنَبِّئُكُمۡ بِشَرٍّ مِّنۡ ذٰلِكُمُ ؕ
اَلنَّارُ ؕ وَعَدَهَا اللّٰهُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا ؕ
وَبِئۡسَ الۡمَصِيۡرُ ﴿۷۲﴾ ع ۹ ۸ ۱۲
يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ
فَاسۡتَمِعُوۡا لَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيۡنَ تَدۡعُوۡنَ
مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ لَنۡ يَّخۡلُقُوۡا ذُبَابًا وَّ
لَوِ اجۡتَمَعُوۡا لَهٗ ؕ وَ اِنۡ يَّسۡلُبۡهُمُ
الذُّبَابُ شَيۡـئًا لَّا يَسۡتَنۡقِذُوۡهُ مِنۡهُ ؕ
ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالۡمَطۡلُوۡبُ ﴿۷۳﴾

बातों का फ़ैसला फ़रमा देगा जिन में तुम इख़्तिलाफ़ करते रहे थे।

70. क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि अल्लाह वोह सब कुछ जानता है जो आस्मान और ज़मीनमें है, बेशक येह सब किताब (लौहे़ मह़फ़ूज़) में (दर्ज) है, यक़ीनन येह सब अल्लाह पर (बहुत) आसान है।

71. और येह लोग अल्लाहके सिवा उन (बुतों) की परस्तिश करते हैं जिसकी उसने कोई सनद नहीं उतारी और न (ही) उन्हें उस (बुतपरस्ती के अंजाम) का कुछ इ़ल्म है, और (क़ियामतके दिन) ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा।

72. और जब उन (काफ़िरों) पर हमारी रौशन आयतें तिलावत की जाती हैं (तो) आप उन काफ़िरों के चेहरोंमें नापसंदीदगी (व ना गवारी के आसार) साफ़ देख सक्ते हैं। ऐसे लगता है कि अ़न क़रीब उन लोगों पर झपट पड़ेंगे जो उन्हें हमारी आयात पढ़ कर सुना रहे हैं, आप फ़रमा दीजिए : (ऐ मुज़्तरिब होनेवाले काफ़िरो !) क्या मैं तुम्हें इससे (भी) ज़ियादह तक्लीफ़ देह चीज़से आगाह करूं? (वोह दोज़ख़ की) आग है जिसका अल्लाहने काफ़िरों से वा'दा कर रखा है और वोह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

73. ऐ लोगो ! एक मिसाल बयान की जाती है सो उसे ग़ौरसे सुनो : बेशक जिन (बुतों) को तुम अल्लाहके सिवा पूजते हो वोह हरगिज़ एक मख्खी (भी) पैदा नहीं कर सक्ते अगरचे वोह सब उस (काम) के लिए जमा' हो जाएं , और अगर उन से मख्खी कोई चीज़ छीन कर ले जाए (तो) वोह उस चीज़ को उस (मख्खी) से छुड़ा (भी) नहीं सक्ते, कितना बेबस है तालिब (आबिद) भी और मत्लूब (मा'बूद) भी।

مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِیٌّ عَزِیْزٌ ﴿۷۴﴾

74. उन (काफ़िरों) ने अल्लाह की क़दर न की जैसी उसकी क़दर करना चाहिए थी । बेशक अल्लाह बड़ी क़ुव्वतवाला (हर चीज़ पर) ग़ालिब है।

اَللّٰهُ یَصْطَفِیْ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِیْعٌۢ بَصِیْرٌ ۚ ﴿۷۵﴾

75. अल्लाह फ़रिश्तोंमें से (भी) और इन्सानोंमें से (भी अपना) पैग़ाम पहुंचानेवालों को मुन्तख़ब फ़रमा लेता है। बेशक अल्लाह ख़ूब सुननेवाला ख़ूब देखनेवाला है।

یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ ؕ وَ اِلَی اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۷۶﴾

76. वोह उन (चीज़ों) को (ख़ूब) जानता है जो उनके आगे हैं और जो उनके पीछे हैं, और तमाम काम उसी की तरफ़ लौटाए जाते हैं।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَ اسْجُدُوْا وَ اعْبُدُوْا رَبَّكُمْ ۪ وَ افْعَلُوا الْخَیْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۷۷﴾ السجدة

77. ऐ ईमान वालो ! तुम रुकूअ करते रहो और सुजूद करते रहो, और अपने रबकी इ़बादत करते रहो और (दीगर) नेक काम किए जाओ ताकि तुम फ़लाह पा सको।

وَ جَاهِدُوْا فِی اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ؕ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَ مَا جَعَلَ عَلَیْكُمْ فِی الدِّیْنِ مِنْ حَرَجٍ ؕ مِلَّةَ اَبِیْكُمْ اِبْرٰهِیْمَ ؕ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِیْنَ ۙ۬ مِنْ قَبْلُ وَ فِیْ هٰذَا لِیَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِیْدًا عَلَیْكُمْ وَ تَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَی النَّاسِ ۚۖ فَاَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ وَ اعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ؕ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰی وَ نِعْمَ النَّصِیْرُ ﴿۷۸﴾ ع ۱۰ ۶ ۱۷

78. और अल्लाह (की मुह़ब्बतो ताअ़त और उसके दीनकी इशाअ़तो इक़ामत) में जिहाद करो जैसा कि उसके जिहाद का ह़क़ है । उसने तुम्हें मुन्तख़ब फ़रमा लिया है और उसने तुम पर दीन में कोई तंगी नहीं रखी । (येही) तुम्हारे बाप इब्राहीम (علیہ السلام) का दीन है । उस (अल्लाह)ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है, इससे पहले (की किताबों में) भी और इस (क़ुरआन) में भी ताकि येह रसूले (आख़िरुज़्ज़मां صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) तुम पर गवाह हो जाएं और तुम बनी नौए़ इन्सान पर गवाह हो जाओ, पस (इस मर्तबे पर फ़ाइज़ रेहने के लिए) तुम नमाज़ क़ाइम किया करो और ज़कात अदा किया करो और अल्लाह (के दामन)को मज़बूतीसे थामे रखो, वोही तुम्हारा मददगार (व कारसाज) है, पस वोह कितना अच्छा कारसाज़ (है) और कितना अच्छा मददगार है।